प्राकृतिक खेती के अवयव

घनजीवामृत बनाने की विधि और फसलों में इसका प्रयोग तथा लाभ

कृषि विज्ञान केन्द्र दलीप नगर, कानपुर देहात

प्रसार निदेशालय

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ0 वि0वि0 कानपुर–208002

परिचय

आज की जीवन शैली में रसायनिक खादों एवं कीटनाशकों के अधिक उपयोग से भूमि बंजर हो रही है जिससे मृदा का जीवांश कार्बन निम्न स्तर पर जा रहा है इसलिए आज के समय में जरूरी हो गया है कि हम घनजीवामृत का उपयोग कर फिर से अपनी मिट्टी की सेहत सुधारें और प्राकृतिक खेती के प्रयोग से फसलोत्पादन करें। घनजीवामृत एक अत्यन्त प्रभावशाली जीवाणुयुक्त सूखी खाद है जिसे देशी गाय के गोबर में कुछ अन्य चीजें मिलाकर बनाया जाता है। घनजीवामृत को बोआई के समय खेत में पानी देने के 3 दिन बाद प्रयोग कर सकते हैं।

घनजीवामृत बनाने की विधि

घनजीवामृत बनाने के लिए 100 किग्रा0 देशी गाय के गोबर को किसी पक्के फर्श पर फेलायें। अब 2 किग्रा0 देशी गुड़, 2 किग्रा बेसन और सजीव मिट्टी का मिश्रण बनाकर अब थोड़ा–2 गौ मूत्र डालकर अच्छी तरह गूंथ लेंगे जिससे उसका घनजीवामृत बन जायेगा। अब इस तरह तैयार मिश्रण को छाया में 48 घण्टों के लिए अच्छी तरह सुखाकर बोरे से ढक देते हैं। 48 घण्टे बाद इस मिश्रण का चूर्ण बनाकर भण्डारित कर लेते हैं। घनजीवामृत को 6 महीने तक प्रयोग कर सकते है।

घनजीवामृत बनाने के लिए आवश्यक सामग्री :

सामग्री	मात्रा
देशी गाय का गोबर	100 किग्रा0
देशी गाय का गौमूत्र	05 ली0
गुड़	2 किग्रा0
बेसन	2 किग्रा0
मिट्टी (बरगद या पीपल के पेड़ के नीचे की मिट्टी)	50 ग्राम

घनाजीवामृत का प्रयोग :

घनजीवामृत का उपयोग किसी भी फसल में कर सकते हैं, घनजीवामृत का उपयोग बहुत ही आसान है इसके प्रयोग के लिए प्रति एकड़ 100 किग्रा0 सूखा देशी गाय के गोबर की खाद के साथ 20 किग्राम घनजीवामृत बोवाई के समय खेत में डालते हैं। घनजीवामृत का उपयोग खेत में पानी देने के 3 दिन बाद भी कर सकते हैं।

घनजीवामृत से लाभ :

- घनजीवामृत के प्रयोग से किसान रसायनिक खेती की अपेक्षा अधिक फसल उत्पादन ले सकते हैं। घनजीवामृत से बीजों का अंकुरण अधिक मात्रा में होता है।
- घनजीवामृत के उपयोग से फसलों के दानों की चमक और स्वाद दोनों ही बढ़ते है।
- इस प्रकार किसान भाई कम लागत में अधिक उत्पादन ले सकते है। तो आइये हम सभी प्राकृतिक खेती अपनाये और स्वयं के साथ ही मिट्टी की सेहत बनायें।
- घनजीवामृत के उपयोग से जैसे ही मिट्टी में नमी आती है इसमें उपस्थित जीवाणु सक्रिय हो जाते है और मिट्टी की उपजाउ क्षमता कई गुना बढ़ा देते है।
- घनजीवामृत के उपयोग से पौधों में रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ती है।
- घनजीवामृत के उपयोग से फसल को आवश्यकता से अधिक गर्मी या ठंडी सहन करने की शक्ति प्रदान करता है। घनजीवामृत में ऐसा कोई तत्व नहीं होता जो किसी भी फसल को हानि पहुचायें।

सम्पर्क सूत्र

डा0 अशोक कुमार
अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर

डा0 अरविन्द कुमार सिंह
समन्वयक, प्रसार निदेशालय

डा0 खलील खान
मृदा वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर